रात्रिक्लास 19/6/68 ओमशान्ति सृष्टिचक्र याद है?

तुम हो सोनपुट। बच्चे भी समझते हैं हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप भी समझते हैं बेहद के बच्चे हैं। इन्हों को गोद में ले जाना है। बच्चे समझते हैं हम अभी आयरन एज में हैं फिर जाना है गोल्डेन एज में। समझते तो सभी हैं बाप बिगर कोई ले नहीं जावेंगे। लिखा हुआ भी है मामेकं याद करो; परन्तु समझते नहीं हैं। कृष्ण को तो कब बाप–टीचर–गुरु कह न सके। बात बहुत सहज है समझने समझाने की। बाप बाप है तो जरूर वरसा देंगे ना। टीचर को सर्वव्यापी कैसे कहेंगे? सर्व को तो पढ़ा न सके। पढ़ाते उनको ही हैं जिनको कल्प पढ़ाया था। जो स्वर्ग के मालिक बनते हैं। बच्चों की बुद्धि में रहना है बाप हमको राजयोग सिखलाते हैं। हम बाबा के पास जाते हैं। बाप से स्वर्ग का वरसा मिलता है। और राजाई प्राप्त कराने पढ़ाते भी हैं। साथ भी ले जावेंगे। यह बच्चों को जरूर याद रहना है। बेहद के बाप के सिवाय और कोई को बाप टीचर गुरु नहीं कहा जा सकता। बाप सभी आत्माओं का बाप है। वह टीचर बन पढ़ाते भी हैं। यह एमऑबजेक्ट है। यह बात बुद्धि में बिठाने से सर्वव्यापी की बात उड़ जावेगी। कहते हैं ना सद्गुरु अकाल। सद्गुरु तो एक ही है। जो सद्गति देने वाला है। गुरुनानक भी सद्गति नहीं दे सकते। वह भी उनकी महिमा करते हैं। बाप की बुद्धि में सारा झाड़ की नॉलेज है। वैसे(ी) नॉलेज तुम बच्चों को भी बुद्धि में कायम रखना है। बच्चों के सिवाय और कोई की बुद्धि में नहीं है; इसलिए उनको पत्थर बुद्धि कहा जाता है। रचयिता और रचना का नॉलेज ही नहीं है। बाप समझाते हैं यह तमोप्रधान दुनिया है। इसमें दुःख है। अभी तुम समझते हो बाकी थोड़ा समय है। फिर 21 जन्म सुखी बन जावेंगे। तो वह खुशी रहती है। जितना जीयें उतना ही अच्छा। बाप से वरसा जास्ती लेवें। कर्मातीत अवस्था तो हुई नहीं है। बाबा कहते हैं ना। अशरीरी होकर जाना है। अनायास ही बैठे2 शरीर छोड़कर आकर नया शरीर ले। वह लोग आजकल हार्ट को बदलते हैं। तुम शरीर को बदलते हो, तो दुनिया को भी बदलते हो। अच्छा, मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाइट। रुहानी बच्चों को नमस्ते।